

# Promise and Restoration Micah 6 & 7

Dr. Michael D. Wedman

1

---

---

---

---

---

---

---

---

## Chapter 6 & 7 – Third Oracle

- Remember:
  - Summons to hear
  - Oracle of doom
  - Statement of hope

2

---

---

---

---

---

---

---

---

## Summons to Hear – 6:1-8

- Summons to hear – 6:1-8
  - Listen to what the Lord says...
- Vs 1&2 are put into a legal format
- The Sinai Covenant was a legal contract with witnesses
  - Deut 30:19; 32:1-2; Isa 1:2

3

---

---

---

---

---

---

---

---

## Summons to Hear – 6:1-8

- Micah is to present the case
- The mountains are the witnesses/jury
- Mountains have witnessed the actions of Israel over a long period of time

4

---

---

---

---

---

---

---

---

## Witness impact statement 6:3-5

How have I wronged you?

How have my actions led you to this?

5

---

---

---

---

---

---

---

---

## Witness Impact Statement 6:3-5

- God's actions have been only good
- God has brought blessing upon them, not harm
  - Redemption from Egypt with godly leadership
  - No one could curse you, only bless you
  - Crossing of the Jordan and defeat of Jericho

6

---

---

---

---

---

---

---

---

## Witness Impact Statement

### 6:3-5

- God has kept His part of the covenant
- He has acted rightly and justly toward them

---

---

---

---

---

---

---

---

7

## The Expectation - 6:6-8

- Vs 6-8 – Micah now speaks as God asked in v1
- How should we respond to the exalted God who keeps His covenant?
  - With what should we come to Him with?
  - How do we worship our God?

---

---

---

---

---

---

---

---

8

## The Expectation – 6:6-8

How do we worship our God?

- With choice sacrifices?
- With many sacrifices?
- With the most precious of sacrifices?

---

---

---

---

---

---

---

---

9

## The Expectation – 6:6-8

Answer:

- Justice toward others
- Mercy toward others
- Humility before God
- To live rightly before God and others!

---

---

---

---

---

---

---

---

10

## The Expectation – 6:6-8

- Justice – how we treat others – James 1:27
- Mercy – ‘hesed’ love toward others
  - Includes faithfulness and kindness
- To walk humbly with God – to live in conscious and constant relationship with God – recognizing who He is and who, then, we are

---

---

---

---

---

---

---

---

11

## The Expectation – 6:6-8

- Micah is contrasting religion with relationship
- God has no interest in the multiplication of empty religious acts
- See Jer 17:19-27; Ps 51:16-19

---

---

---

---

---

---

---

---

12

## Oracle of Doom 6:9-7:6

- Mistreatment of the poor
- False scales and weights – cheating/deception
- Violence against others
- Lying and falsehood is the common language

13

---

---

---

---

---

---

---

---

## Oracle of Doom – 6:9-7:6

- God has begun to destroy them – He is in process
- Famine
- War
- Loss of crops

14

---

---

---

---

---

---

---

---

## Oracle of Doom – 6:9-7:6

- Another sin is mentioned – following after false gods
- Omri was the father of Ahab of the famous Ahab/Jezebel pair

15

---

---

---

---

---

---

---

---

## Oracle of Doom 6:9-7:6

- Another judgment is mentioned
- The nation will be ruined and made to be a scorn of the other nations – Lev 26:31-33
- No longer the head, but now the tail

16

---

---

---

---

---

---

---

---

## Oracle of Doom – 6:9-7:6

Chapter 7 – Micah’s lament

- There is no one left who is righteous
- No one left for him to fellowship with
- There is no one righteous, no not one
- Rom 3:10-12; Ps 14:1-3; 53:1-3

17

---

---

---

---

---

---

---

---

## Oracle of Doom – 6:9-7:6

Chapter 7 – Micah’s lament

- Murder
- Evil practices
- Distortion of justice for their own gain
- False righteousness

18

---

---

---

---

---

---

---

---

## Oracle of Doom – 6:9-7:6

### Chapter 7 – Micah’s lament

- Confusion and disorder of societal relationships
  - No trustworthiness or faithfulness
  - Not even your own family
  - Not even the closest of relationships- marriage

NOTE! Mal 4:5-6

---

---

---

---

---

---

---

---

19

## Statement of Hope – 7:7-20

- Micah turns the focus onto hope – hope in God
- The godly will look to their Saviour in times of distress and destruction
- There is an expectancy of salvation and restoration
- God is still faithful

---

---

---

---

---

---

---

---

20

## Statement of Hope – 7:7-20

- Where sin abounds, grace abounds even more!
  - Rom 5:20-6:4
- Sin always results in death, but grace always results in life

---

---

---

---

---

---

---

---

21

## Statement of Hope – 7:7-20

- The Israelites and the inhabitants of the earth will be judged for their sin
- The day is coming when all will be made right

---

---

---

---

---

---

---

---

22

## Statement of Hope – 7:7-20

- The Shepherd is coming to lead His people
  - John 10:11
- The One spoken of in Micah 5:2
- The nations will be ashamed but the righteous will rejoice

---

---

---

---

---

---

---

---

23

## Statement of Hope – 7:7-20

- There is no God like our God!
  - Our God forgives sin
  - Our God is faithful
  - Our God shows His 'hesed' love to His people
  - See Ex 34:6-7

---

---

---

---

---

---

---

---

24



## Conclusion/Summary

- God will restore the rightful order of creation when Jesus returns!
- Wait for God
- Trust in God
- Be faithful to God because He is faithful to you!

---

---

---

---

---

---

---